शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

समाज का आर्थिक स्तर एवं प्रजननता : एक आर्थिक विश्लेषण (पश्चिमी उ०प्र० के जनपद बिजनौर के विशेष सन्दर्भ में)

प्राप्तिः 30.08.2023
स्वीकृतः 15.09.2023

59

डॉ० मीनाक्षी चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
गुलाब सिंह हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, चांदपुर
ईमेलः *chauhan.meenakshi25@gmail.com*

सारांश

विभिन्न अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या देश के आर्थिक विकास में अवरोधक हो रही है परिणामस्वरूप नियोजित आर्थिक विकास के प्रयास निश्फल हो रहे है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का कारण स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर में तीव्र गति से कमी हुई है परन्तु उसी अनुपात में प्रजनन दर में कमी नहीं हुई है। अतः यदि हमें विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा होना है तो प्रजनन दर को घटाने के प्रयत्न करने होंगे। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रजनन दर को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में समाज के आर्थिक स्तर का चुनाव करके यह अवलोकित करने का प्रयत्न किया गया है कि व्यक्तियों का आर्थिक स्तर किस प्रकार प्रजननता को प्रभावित करता है?

- **अध्ययन के उद्देश्य**

मेरे इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

क. समाज के आर्थिक स्तर का प्रजननता पर प्रभाव अवलोकित करना।

ख. समाज के आर्थिक स्तर में वृद्धि हेतु सुझाव संकलित करना।

- **उपपरिकल्पना**

समाज के आर्थिक स्तर तथा प्रजननता में कोई गुण साहचर्य नहीं है।

- **अध्ययन विधि**

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों का संकलन एक अनुसूची के माध्यम से मेरे द्वारा स्वयं किया गया है। ये समंक वर्तमान सत्र 2022–23 से सम्बन्धित हैं। जबकि द्वितीयक समंकों का संकलन, पत्र–पत्रिकाओं, शोध–पत्रिकाओं, पुस्तकों तथा इण्टरनेट इत्यादि से किया गया है। समंकों के विश्लेषण हेतु वर्गीकरण, सारणीयन तथा काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

- **अवलोकित साहित्य**

मिश्रा जय प्रकाश (2014) ने अपनी पुस्तक जनांकिकी के पृष्ठ संख्या 149 पर लिखा है कि ''यह जनांकिकीय अध्ययनों के उपरान्त एक मान्य योग्य सत्य लगता है कि धनी व्यक्तियों की अपेक्षा निर्धनों के अधिक बच्चे होते हैं।'' डॉ0 वि0 कुमार (2012) ने भी अपनी पुस्तक जनांकिकी के पृष्ठ संख्या–177 पर लिखा है कि ''लोगों का सामाजिक–आर्थिक स्तर भी प्रजननता को प्रभावित करता

है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि उच्च सामाजिक स्तर के लोगों की अपेक्षा निम्न सामाजिक स्तर के लोगों में प्रजननता दर अधिक होती है।''

- **प्रजननता से अभिप्राय**

सामान्यता प्रजननता अथवा प्रजननशीलता (Fertility) का अभिप्राय किसी स्त्री अथवा उनके किसी समूह द्वारा किसी विशिष्ट समयावधि में कुल जन्में सजीव बच्चों की वास्तविक संख्या से होता है। यदि किसी स्त्री ने कभी किसी बच्चे को जन्म दिया हो तो उस महिला को प्रजननीय या प्रजननशील (Fertile) कहा जायेगा। इस तरह प्रजननता की माप किसी समयावधि विशेष में सजीव जन्में बच्चों की आवृत्ति से भी की जा सकती है।

- **समंकों का विश्लेषण**

यदि भारत में प्रजनन व्यवहार का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि यहां जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र है जिसका मुख्य कारण जन्म दर् तथा मृत्यु दर में बढ़ता हुआ अन्तर है। इस तथ्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है –

भारत में जन्म दर, मृत्यु दर एवं स्वाभाविक वृद्धि दर (प्रति हजार)

क्र०सं०	वर्ष	जन्म दर	मृत्यु दर	स्वाभाविक वृद्धि दर
1	1961	41.7	20.8	20.9
2	1971	41.1	18.9	22.2
3	1981	36.0	14.8	21.2
4	1991	29.5	9.8	19.7
5	2011	21.8	7.1	14.7

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि यद्यपि जन्म दर व मृत्यु दर दोनों में कमी हुई है तथापि जन्म दर व मृत्युदर का अन्तर बढ़ा है अर्थात् प्रजननता में अपेक्षित कमी नहीं हो पायी है जो जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का एक प्रमुख कारण है।

विश्व के कुछ प्रमुख देशों की जन्म दर (प्रति हजार) तथा कुल प्रजनन दर (प्रति स्त्री)

क्र०सं०	देश का नाम	जन्म दर (प्रति हजार) (2007–08)	कुल प्रजनन दर (प्रति स्त्री) (2011)
1	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	14.0	2.1
2	कनाडा	11.2	1.7
3	आस्ट्रेलिया	10.6	2.0
4	यूनाईटेड किंगडम	12.9	1.9
5	स्पेन	11.7	1.5
6	फ्रांस	12.7	2.0
7	चीन	12.4	1.6
8	भारत	22.1	2.5

Source : The Statesman"s year Book 2012

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रमुख देशों में भारत की जन्म दर तथा प्रजनन दर दोनो अधिक है। फलस्वरूप आज भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है।

भारत के रहन–सहन का स्तर एवं प्रजननता

क्र०सं०	आय एवं रहन–सहन का स्तर	कुल प्रजनन दर (15–49 आयु वर्ग की स्त्रियों के आधार पर)	कुल प्रजनन दर (40–49 आयु वर्ग की स्त्रियों के आधार पर)
1	उच्च	2.10	3.61
2	मध्यम	2.85	4.67
3	निम्न	3.37	4.81

Source : NFHS-2 India

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि आय एवं रहन–सहन के स्तर तथा प्रजननता के मध्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है अर्थात जैसे–जैसे आय एवं रहन के स्तर में वृद्धि होती है, प्रजननता कम होती जाती है।

उपकल्पना (शून्य परिकल्पना) का परीक्षण

इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए जनपद बिजनौर के नगर चांदपुर एवं ग्राम स्याऊ से 50 परिवारों का चयन किया गया है। जिनमें 10 उच्च आय वर्ग से 20 मध्यम आय वर्ग के तथा 20 निम्न आय वर्ग से चुने गये है। इन परिवारों के औसत बच्चों की संख्या निम्न तालिका में प्रदर्शित की गयी है –

क्र०सं०	आय स्तर	बच्चों की कुल संख्या	बच्चों की औसत संख्या
1	उच्च	24	2.4
2	मध्यम	60	3.0
3	निम्न	72	3.6

प्राथमिक समंकों के आधार पर कहा जा सकता है कि आय स्तर में वृद्धि प्रजननता में कमी करती है अर्थात आय स्तर में वृद्धि होने पर लोग अपना सामाजिक स्तर बनाये रखने के लिए परिवार नियोजन पर ध्यान केन्द्रित करते है, इसके विपरीत निम्न वर्ग के लोग अधिक बच्चों को अपनी आय में वृद्धि का स्रोत समझते हैं।

शून्य परिकल्पना (H_0) – समाज के आय स्तर तथा प्रजननता में कोई गुण साहचर्य नहीं है, का परीक्षण करने हेतु χ^2 – परीक्षण का प्रयोग किया गया है। उपलब्ध समंकों का वर्गीकरण (2X2) आसंग सारणी में किया गया है तथा यह मानते हुए कि गुण A तथा B में कोई गुण साहचर्य नहीं है, के आधार पर प्रत्याशित आवृत्तियों को ज्ञात करके χ_1^2 का परिकलन किया गया है, जो निम्न प्रकार है –

$ अवलोकित आवृत्ति सारणी

प्रजननता (B)	आय स्तर (A)		
	वृद्धि (A_1)	कमी (A_2)	योग
B_1 वृद्धि	(A_1B_1) 5	(A_2B_1) 10	(B_1) 15
B_2 कमी	(A_1B_2) 28	(A_2B_2) 07	(B_2) 35
योग	33(A_1)	17(A_2)	50(N)

$ प्रत्याशित आवृत्ति सारणी

A B	A_1	A_2	योग
B_1	10	5	(B_1) 15
B_2	23	12	(B_2) 35
योग	33(A_1)	17(A_2)	50(N)

$$E(A_1B_1) = \frac{(A_1)(B_1)}{N} = \frac{33\times15}{50}$$

$$=9.9 \qquad = 10$$

$$\chi^2$ का परिकलन

f_0	5	10	28	07	Total 50
fe	10	5	23	12	50
f_0-fe	-5	+5	+5	-5	0
$(f_0\text{-fe})^2$	25	25	25	25	100
$(f_0\text{-fe})^2$/fe	2.500	5.00	1.086	3.571	12.157
			d.f. =(r-1)(c-1)=1		

$ Result :

$$\chi_1^2(cal) = 12.157 \quad \chi_1^2(tab)_{.05} = 3.841$$

यहां पर χ_1^2 का परिकलित मूल्य 5% सार्थकता स्तर पर उसके सारणिक मूल्य (3.841) से अधिक है। अतः 5% सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाज का आय सतर प्रजननता को प्रभावित करता है परन्तु उसकी दिशा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें यूल के गुण सम्बन्ध गुणांक Q_{AB} का परिकलन निम्न प्रकार करना होगा –

$$Q_{AB} = \frac{(A_1B_1)(A_2B_2)-(A_2B_1)(A_1B_2)}{(A_1B_1)(A_2B_2)+(A_1B_2)(A_2B_1)}$$

$$= \frac{5\times7-28\times10}{5\times7+28\times10}$$

$$= \frac{35-280}{35+280} = \frac{-245}{315}$$

$$=- 0.778$$

इस प्रकार स्पष्ट है कि समाज के आय स्तर तथा प्रजननता में उच्च कोटि का ऋणात्मक गुण साहचर्य पाया जाता है अर्थात आय स्तर में वृद्धि होने पर प्रजननता घटती जाती है।

- **संकलित सुझाव**

इस शोध–पत्र के लिए प्राथमिक समंकों का संकलन करते समय प्रजननता को नियंत्रित करने हेतु सुझाव भी संकलित किये गये हैं जो निम्न प्रकार हैं –

1. सरकार द्वारा रोजगार में वृद्धि के प्रबल प्रयास करने चाहिए। इसके लिए सरकार द्वारा जो रणनीति बनाई जाये, उसे पूर्ण रूप से कार्यान्वित करना चाहिए। विदित है कि सरकार द्वारा सभी को सरकारी कार्यालयों में रोजगार देना सम्भव नहीं है। अतः स्वरोजगार के लिए एक नीति बनानी चाहिए तथा युवकों को इसके लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहन देना चाहिए। ऐसा करने पर परिवारों का आर्थिक स्तर बढ़ेगा तथा प्रजननता नियंत्रित होगी।
2. माध्यमिक तथा उच्च शैक्षिक संस्थानों में रोजगारपरक् शिक्षा को प्रोत्साहित तथा लागू करना चाहिए। जिससे शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त विद्यार्थी सरकारी अथवा स्वरोजगार प्राप्त कर सके।
3. सरकार द्वारा जो भी मुफ्त की योजनाएं चलायी जा रही है, इन्हें तत्काल बन्द करना चाहिए तथा गरीब परिवारों को उनकी योग्यता के अनुसार आर्थिक सहायता प्रदान करके रोजगार की ओर प्रेरित करना चाहिए तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाना चाहिए।
4. सरकार द्वारा उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की नीति को अपनाना चाहिए, इससे एक ओर तो प्रवास की समस्या का समाधान होगा तथा दूसरी ओर घर से उचित दूरी पर रोजगार मिलने से परिवारों के आर्थिक–सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी, जो प्रजननता को प्रभावित करेगी।
5. यह सर्वविदित है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन व मस्तिश्क निवास करता है, जिससे व्यक्ति की कार्यक्षमता का विकास होता है, फलस्वरूप आर्थिक–सामाजिक स्तर में सुधार होता है।
6. बाल–श्रम को पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित करना चाहिए, क्योंकि निर्धन परिवार बच्चों को आय प्राप्ति का साधन समझते हैं जो अधिक प्रजननता का एक प्रमुख कारण है।
7. सरकार को संतोशजनक सामाजिक सुरक्षा के उपायों पर भी ध्यान केन्द्रित करना होगा। यदि सामाजिक सुरक्षा संतोशजनक होगी तब लोगों में मन में बुढापे के सम्बन्ध में कोई चिन्ता नहीं होगी और ऐसी देशा में बच्चों पर निर्भरता की आवश्यकता नहीं होगी।

निष्कर्ष

समंकों के आधार पर यह विदित होता है कि निर्धन एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर समाज में जहां रहन–सहन का स्तर निम्न होता है वहां परिवार का आकार बड़ा होता है तथा प्रजननता दर अधिक होती है। निर्धनता के कारण माता–पिता को यह आशा होती है कि उनके बच्चे उनके साथ काम करके उनकी आय में वृद्धि करेंगे। गरीबी के कारण ऐसे लोग भाग्यवादी हो जाते हैं और बच्चों को ईश्वर की देन मानते हैं। निम्न स्तर पर रहने वाला व्यक्ति सामान्यतया अपने बच्चों के उच्च जीवन स्तर की बात नहीं सोचता। इसके विपरीत मध्यम व उच्च जीवन स्तर वाले समाज में शिक्षा का स्तर, विवाह की आयु, महिलाओं की प्रतिष्ठा अधिक होती है तथा लोग परिवार नियोजन को महत्व प्रदान करते हैं। महत्वाकांक्षी होने के कारण लोग अपने रहन–सहन के प्रति जागरूक होते हैं। अतः इन परिवारों की प्रजननता दर अपेक्षाकृत कम होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि निर्धनता तथा

रहन–सहन का निम्न स्तर भारत की जनसंख्या और प्रजननता दर बढ़ने का महत्वपूर्ण कारक है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारत में जनसंख्या की समस्या भारत की निर्धनता का कारण नहीं बल्कि परिणाम है।

सन्दर्भ

1. मिश्रा, डॉ० जयप्रकाश. (2019). जनांकिकी. साहित्य भवन पब्लिकेशन्सः आगरा।
2. कुमार, डॉ० वी०. (2012). जनांकिकी. साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्सः आगरा।
3. मैग बुक. भारतीय अर्थव्यवस्था. अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लि०ः मेरठ।
4. नागर, कैलाश नाथ. सांख्यिकी के मूल तत्व. मीनाक्षी प्रकाशनः मेरठ।
5. www.google.com.